दुधारू-पशुओं के विकास के लिए कार्यक्रम

3254. **चौधरी हरमोहन सिंह:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) दूध के उत्पादन को बढ़ाने के अतिरिक्त कम मूल्य पर दूध उपलब्ध कराने के लिए दुधारू पशुओं की स्वदेशी नस्लों के संबंध में अनुसंधान और विकास कार्य करने के लिए सरकार द्वारा कौन-कौन से कार्यक्रम कार्यान्वित किए गए हैं;

(ख) इस संबंध में किए जा रहे कार्यों का ब्यौरा क्या है और उन पर क्या कार्यवाही की गई है; और

(ग) इस संबंध में कितनी सफलता मिली है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एस॰ कृष्ण कुमार): (क) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से मवेशी प्रायोजना निदेशालय, मेरठ तथा राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के माध्यम से दूध उत्पादन के लिए देशी नस्लों के सुधार हेतु अनुसंधान कार्य कर रही है।

(ख) सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान अध्ययन के लिए जिन दो नस्लों को शामिल किया गया वे थी:

(i) हरियाणा-इसके जर्मप्लाजम का केन्द्र सी.सी.एस., हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में स्थित है।

हरियाणा नस्ल के साथ चार सहायक नस्लें भी हैं।

(ii) अंगोल-इसके जर्मप्लाजम का केन्द्र पशु अनुसंधान केन्द्र, लाम तथा आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, गुन्टूर में स्थित है तथा

(iii) साहीवाल-इसके जर्मप्लाजम का केन्द्र-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में है।

आठवीं योजना के दौरान दो नस्लें-नामत: गिर और यरपारकर पर उसी आधार पर अध्ययन के लिए स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। इन नस्लों में से प्रत्येक के लिए मॉडल कार्यक्रमों के तहत काफी संख्या में उत्कृष्ट पशु रखे जायेंगे तथा वीर्य उत्पादन के लिए सांड केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं की लगभग 750 नस्लों का काम किया जाएगा। सहायक नस्लों का इस्तेमाल करके वंशक्रम परीक्षण के लिए प्रत्येक सेट के लिए लगभग 10 प्रजनन योग्य सांडों को इस्तेमाल किया जाएगा। इसमें प्रत्येक "साइरे" मूल्यांकन हेतु सांड से प्रजनित 20-25 बछियों का अध्ययन किया जाएगा।

(ग) (i) हरियाणा, अंगोल और साहीवाल नस्लों के जर्मप्लाजम केन्द्रों की स्थापना की गई।

(ii) हरियाणा और अंगोल नस्लों में से प्रत्येक के कुल 16 सांडों का प्रयोग पहले दो सेटों में परीक्षण के लिए किया गया। तीसरे सेट के लिए इन नस्लों में से प्रत्येक के 8-10 सांडों को पहचाना गया।

(iii) अंगोल नस्ल के जर्मप्लाजम केन्द्र में 91,000 प्रशीतित वीर्य स्ट्रा तैयार किए गए और हरियाणा नस्ल के जर्मप्लाजम केन्द्र ने लगभग 30,000 प्रशीतित वीर्य स्ट्रा तैयार किए हैं।

(iv) हरियाणा, अंगोल और साहीवाल के प्रशीतित वीर्य के लिए जीन बैंक स्थापित किया गया है और परीक्षण किए जा रहे प्रत्येक सांड के प्रशीतित वीर्य की 1000 खुराकें भंडारित की गई हैं।

(v) प्रयोग के बाद जर्मप्लाजम यूनिटों में जो अतिरिक्त सांड होते हैं उन्हें पशु पालन के राज्य विभागों और दूसरी विकासशील एजेंसियों को हस्तांतरित किया जा रहा है जिससे कि प्रजनन सुधार के लिए व्यापक रूप से उनका उपयोग किया जा सके।

(vi) प्रयोजना द्वारा विकसित आंकड़ा रिकार्ड करने वाली पद्धति से भारत में देसी नस्लों के लिए एक "नेटवर्क" तैयार करने में सहायता मिलेगी।

घटिया उर्वरक, कीटनाशी और बीज की बिक्री संबंधी धोखाधड़ी का रहस्योद्घाटन

3255. **श्री नागमणि :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मध्य प्रदेश सरकार ने एक ऐसी धोखाधड़ी का रहस्योद्घाटन किया है जिसमें ऐसी 110 कम्पनियां शामिल हैं, जो किसानों को घटिया किस्म के कीटनाशी, बीज और उर्वरक बेच रही थी, जैसा कि दिनांक 12 जुलाई, 1994 के हिन्दी दैनिक "जनसत्ता" में समाचार प्रकाशित हुआ है;

(ख) यदि हां, तो इन कम्पनियों का ब्यौरा क्या है और इनकी शाखाएं किन-किन राज्यों में कार्यरत हैं; और

(ग) इन कम्पनियों के विरुद्ध की जा रही कार्यवाही का ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एस॰ कृष्ण कुमार): (क) जी, नहीं। यह कथन इस तथ्य पर आधारित है कि 1990-91 से 1993-94 तक 4 वर्षों के दौरान राज्य कीनाशक परीक्षण प्रयोगशाला, जबलपुर में रोजमर्रा में